आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425
डाक पंजीकरण संख्या : P/RTK/10/2011-13

सृष्टि संवत् 1960853113
विक्रम संवत् 2069
दयानन्दाब्द 189

॥ ओ३म् ॥

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र
E-mail : aryapsharyana@gmail.com दूरभाष : 01262-216222 सम्पादक : सत्यवीर शास्त्री
विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर
वर्ष : 9 अंक : 36 रोहतक, 21 फरवरी, 2013 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन—एक सफल एवं सार्थक आयोजन

❑ प्रो० ओमकुमार आर्य, उपप्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

हम सब जानते हैं कि उन्नीसवीं शताब्दी के महान् देशभक्त, क्रान्तिकारी संन्यासी, समाज-सुधारक एवं वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ज़ीवन पर्यन्त वैदिक-धर्म के प्रचार-प्रसार के लिये अनवरत प्रयास एवं संघर्ष किया तथा सत्य सनातन वैदिक धर्म की पावन बलिवेदी पर अपने प्राणों की आहुति दी ताकि विश्व से अज्ञान, अविद्यादि का अंधकार हटे, ज्ञान का प्रकाश फैले, सत्य की स्थापना हो। ऋषि द्वारा संस्थापित 'आर्यसमाज' उन्हीं के पदचिह्नों पर चलता हुआ उन द्वारा अधूरे छोड़े गए कार्य को पूरा करने का प्रयास कर रहा है। इसी कार्य की पूर्ति हेतु आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा भी प्रान्त भर में अनेक प्रकार की गतिविधियाँ सदा चलाती रहती है और समय-समय पर जिला स्तरीय तथा प्रान्त स्तरीय आर्य महासम्मेलन भी आयोजित करती रहती है। सभा के संरक्षक पूज्य आचार्य बलदेव जी, प्रधान आचार्य विजयपाल जी, मंत्री श्री सत्यवीर जी शास्त्री, अन्य पदाधिकारी गण, सदस्य, कार्यकर्त्तादि बहुत ही चेष्टापूर्वक इस कार्य को आगे बढ़ाने में प्रयासरत रहते हैं। गत रविवार 17 फरवरी 2013 को सुबह 8.30 बजे से सायं 5 बजे तक सभा परिसर दयानन्दमठ रोहतक में बड़ी धूमधाम से आयोजित किया गया 'हरयाणा प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन' भी इसी शृंखला की एक उज्ज्वल कड़ी था जो अपनी शानदार सफलता और सुव्यवस्था के कारण जनमानस पर अमिट प्रभाव छोड़ गया तथा एक सफल एवं सार्थक आयोजन के रूप में श्रोताओं एवं दर्शकों के स्मृति पटल पर चिरकाल तक अंकित भी रहेगा।

कार्यक्रम का प्रारम्भ यज्ञ से हुआ जो मा० जिलेसिंह जी आर्य (पूर्व कोषाध्यक्ष, सभा) के संयोजकत्व तथा आचार्य ऋषिपाल जी (गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ) के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। यज्ञोपरान्त बहन सुमित्रार्या (उपमंत्री, सभा) के मधुर भजन सुनने को मिले। यज्ञ पर बड़ी संख्या में श्रद्धालु आर्य नर-नारी उपस्थित थे। आर्यसमाज लाजपत चौक हिसार के संरक्षक एवं पूर्वमंत्री हरयाणा सरकार चौ० हरिसिंह जी सैनी और उनके समाज के कर्मठ सदस्य श्री बजरंगलाल जी भी यज्ञ के समय उपस्थित थे। तत्पश्चात् आचार्य बलदेव जी, सभाप्रधान आचार्य विजयपाल जी, अन्य साधु-संन्यासी एवं आर्यजनों के सान्निध्य में, आचार्य चंद्रदेव जी (प्रचारमंत्री सार्वदेशिक आर्यवीर दल) के निर्देशन एवं मार्गदर्शन में चौ० हरिसिंह जी सैनी के करकमलों द्वारा ध्वजारोहण सम्पन्न हुआ। ब्रह्मचारियों ने वैदिक राष्ट्रगान का गायन किया, जयघोष किया गया और अगला सारा कार्यक्रम खुले परिसर में बनाये गये भव्य मञ्च पर से चला।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में उपस्थित भीड़ और (इनसेट में) सम्बोधित करते हुए वरिष्ठ कांग्रेसी नेता कुलदीप सिंह नम्बरदार।

वेद का पठन-पाठन और श्रवण-श्रावण हम सब आर्यों का परम धर्म है, इसलिये यज्ञ के पश्चात् सर्वप्रथम **'वेद-सम्मेलन'** रखा गया। इसका संयोजन मनुस्मृति के आधुनिक सर्वाधिक प्रामाणिक भाष्यकार डॉ० सुरेन्द्र कुमार (गुड़गांव) ने किया। सभा के वेदप्रचाराधिष्ठाता आचार्य अभयसिंह ने संयोजन में हाथ बंटाया तथा अध्यक्षता पूज्य आचार्य बलदेव जी ने की। चौ० हरिसिंह जी सैनी के उद्घाटन भाषण के बाद डॉ० सुरेन्द्र कुमार (संस्कृत विभाग 'मदवि'), डॉ० राजेन्द्र विद्यालंकार (कुरुक्षेत्र), प्रो० ओमकुमार आर्य, डॉ० जगदेवसिंह (सेवानिवृत्त प्राचार्य) वेदों की महत्ता, वेदाध्ययन की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री रामनिवास जी आर्य का बहुत ही ओजस्वी, शिक्षाप्रद भजनोपदेश भी हुआ। अध्यक्षीय भाषण के उपरान्त तुरन्त 'राष्ट्ररक्षा-सम्मेलन' प्रारम्भ हुआ जिसका संयोजन श्री राजबीर जी आर्य (बहादुरगढ़) ने किया। इस अवसर पर गुरुकुल झज्जर के पूर्व स्नातक एवं वर्तमान में दिल्ली प्रदेश की विधानसभा के माननीय अध्यक्ष डॉ० योगानन्द भी मञ्च की शोभा बढ़ा रहे थे। राष्ट्ररक्षा-सम्मेलन उन्हीं की अध्यक्षता में हुआ। सभामन्त्री श्री सत्यवीर जी शास्त्री तथा सभा-उपप्रधान श्री कन्हैयालाल जी (गुड़गांव) तथा अन्य वक्ताओं के सारगर्भित व्याख्यान हुये। वक्ताओं ने श्रोताओं को सावधान किया कि वे राष्ट्र की रक्षा के मामले में बड़ी जागरूकता और तत्परता के साथ राष्ट्रभक्त संस्थाओं और ताकतों का साथ दें अन्यथा राष्ट्र की सुरक्षा खतरे में पड़ जायेगी। आदरणीय डॉ० योगानन्द जी ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन द्वारा बहुत शोधपूर्ण जानकारी श्रोताओं को दी और राष्ट्र की रक्षा हेतु सुन्दर प्रेरणा दी। इसके पश्चात् हरियाणा गोशाला संघ के अत्यन्त गोभक्त युवा प्रधान आचार्य योगेन्द्र जी की अध्यक्षता एवं बहुत ही सक्रिय मंत्री (गोशाला संघ) श्री सर्वमित्रार्य के संयोजकत्व में गोरक्षा सम्मेलन आयोजित किया गया। वक्ताओं में सर्वश्री आचार्य देवव्रत जी (गुरुकुल कुरुक्षेत्र), अजमेर से पधारे उदीयमान वैदिक प्रवक्ता आचार्य सोमदेव जी, आजाद सिंह जी आर्य, प्रधान बाल भारती स्कूल पानीपत, स्वामी धर्मदेव जी (गुरुकुल कालवा), आचार्य अभयसिंह आदि ने सभा को संबोधित किया। सभी विद्वान् वक्ताओं ने बहुत ही मार्मिक शब्दों में गोमाता की वर्तमान दुर्दशा का चित्रण किया और वैज्ञानिक शोध तथा प्रयोगों के आधार पर बताया कि गोवंश की नस्ल सुधारी जा सकती है, कई गोशालायें इस दिशा में बहुत अच्छा कार्य कर रही हैं, वह दिन दूर नहीं जब गोमाता एक अत्यन्त लाभदायक एवं उपयोगी पशु बन जायेगा और प्रत्येक घर के खूंटे पर गोमाता के दर्शन होंगे। इस अवसर पर प्रान्त के मुख्यमन्त्री चौ० भूपेन्द्र सिंह हुड्डा के चचेरे भाई नम्बरदार श्री कुलदीप जी भी उपस्थित थे जिन्होंने माननीय सांसद श्री दीपेन्द्र जी (जो किन्हीं कारणों से स्वयं नहीं आ सके) की ओर से सभा को 11 लाख (ग्यारह लाख रुपए) की अनुदान राशि दिये जाने की घोषणा की। माननीय मुख्यमन्त्री महोदय का हार्दिक धन्यवाद किया गया कि उन्होंने हरयाणा 'गोसेवा आयोग' का गठन किया है जिसमें हरयाणा गोशाला संघ से जुड़े गोभक्तों एवं संघ के पदाधिकारियों को 'गोसेवा आयोग' में शामिल किया गया है। विवेच्य प्रान्तीय आर्य

शेष पृष्ठ 2 पर....

टेलीविजन देखने से 20 हानियाँ

❑ राजवीर आर्य, गली नं० 11, धर्म विहार, बहादुरगढ़, जिला झज्जर

1. आँखें कमजोर होती हैं। आजकल अक्सर छोटे-छोटे बच्चे भी चश्मे लगाए हुए दिखाई देते हैं जिनका मुख्य कारण बहुत समय तक लगातार टेलीविजन देखना होता है।
2. हिंसा की भावना पैदा होती है।
3. समय नष्ट होता है जिससे विद्यार्थियों की पढ़ाई पर प्रभाव पड़ता है।
4. टेलीविजन में ज्यादातर अश्लीलता का प्रसारण होने से चरित्रहीनता बढ़ती है।
5. हमारी प्राचीन संस्कृति प्रभावित होती है जिससे इसके नष्ट होने का भय निरन्तर बना रहता है।
6. छोटे-बड़ों की आपस की लज्जा को समाप्त करता है।
7. तरह-तरह के विज्ञापनों को देखने व सुनने से व्यर्थ का खर्चा बढ़ता है क्योंकि कम गुणों वाली वस्तु को बढ़ा-चढ़ाकर उसकी बनावटी गुणवत्ता से ग्राहकों को ललचाया जाता है।
8. अपराध की प्रवृत्ति पैदा होती है। अक्सर देखने व अखबार इत्यादि पढ़ने पर पता लगता है कि अमुक व्यक्ति ने यह अपराध अमुक फिल्म देखकर किया।
9. टेलीविजन देखने से रक्तचाप उच्च और निम्न होता है, क्योंकि उत्तेजक दृश्य देखने पर ज्यादा और गम्भीर मौत आदि के दृश्य देखने पर कम होना स्वाभाविक है जिससे मृत्यु तक हो सकती है।
10. फैशनपरस्ती को बढ़ावा मिलता है। सादगी, सदाचार, शिष्टाचार को समाप्त करके शराब, बीड़ी, सिगरेट, नृत्य, मांसाहार आदि व्यसनों को बढ़ावा मिलता है।
11. अन्धविश्वास व पाखण्ड फैलता है।
12. समगोत्र विवाह जैसी बुराइयों को बढ़ावा मिलता है।
13. श्री आमिर खान के '**सत्यमेव जयते**' जैसे सिरियल्जों द्वारा सर्वखाप पंचायत जैसी लोकप्रिय व न्यायप्रिय इकाइयों की प्रति अविश्वास की भावना पैदा होती है।
14. मूर्तिपूजा को बढ़ावा मिलता है।
15. गुरुडमवाद फैलता है।
16. मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र, महावीर श्री हनुमान्, योगेश्वर श्रीकृष्ण और ऋषि दयानन्द आदि महापुरुषों के आदर्शों को ग्रहण करने की बजाय अमिताभ बच्चन, शाहरूख खान और धर्मेन्द्र आदि को बच्चे अपना आदर्श पुरुष मान लेते हैं और इन्हीं की तरह व्यवहार भी करते हैं। मूर्खों ने तो अमिताभ बच्चन का मन्दिर भी बना लिया है।
17. समाज में स्थापित मर्यादाओं को तोड़ने का प्रोत्साहन मिलता है।
18. संस्कार बिगड़ते हैं, क्योंकि जैसा हम देखते व सुनते हैं वैसा ही चिन्तन करते हैं और फिर वैसा ही कार्य करते हैं।
19. देश की अर्थव्यवस्था को हानि पहुँचती है। उदाहरण के लिए फिल्म इंडस्ट्री में जो बजट खर्च होता है और उससे जो आय होती है वह थोड़े व्यक्तियों तक ही सीमित रहती है जिससे देश के विकास में बाधा आती है।
20. संयुक्त परिवारों को तोड़ने में भी टेलीविजन की बहुत बड़ी भूमिका है।

कुछ थोड़े समय के लिए अच्छे शिक्षाप्रद प्रोग्रामों को देखने की हम मनाही नहीं करते हैं, हमने जो कुछ लिखा है, वह टेलीविजन द्वारा जो आजकल परोसा जा रहा है और उसके क्या दुष्परिणाम आ रहे हैं उसी को आधार बनाकर लिखा है। ध्यान रहे '**सावधानी हटी और दुर्घटना घटी**' कुसंग से दूर ही रहें तो अच्छा है।

कृपया ध्यान दें

उन सभी ग्राहकों से निवेदन है जिनका पत्रिका का शुल्क समाप्त हो चुका है, वे अपना वार्षिक शुल्क 150/- मनीआर्डर/बैंक ड्राफ्ट द्वारा '**आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक** के नाम से शीघ्र भेजें तथा जिन ग्राहकों को पत्रिका नहीं मिल रही है, वे कृपया अपनी ग्राहक संख्या, अपना पूरा पता, पिनकोड और मोबाइल नं० साफ-साफ लिखकर भेजें जिससे उन्हें समय पर पत्रिका पहुंच सके।

—सम्पादक

प्रोफेसर बने साधक

प्रो० सुरेश जी सांघी ने सांघी ग्राम में सेवामुक्त होकर 1 फरवरी को बृहद् दीक्षा यज्ञ किया। आर्यजगत् के वैदिक विद्वान् आचार्य वेदमित्र जी ने यज्ञोपरान्त साधना पर बोलते हुये कहा कि भारत में प्रत्येक गृहस्थ वानप्रस्थादि आश्रम में दीक्षित होकर समाज का कार्य किया करता था। हमारे ऋषि ही नहीं राजा भी इस व्रत से बंधकर आत्मज्ञान प्राप्त करते थे।

कार्यक्रम के उपरान्त प्रोफेसर जी के आश्रम में आचार्य जी आम का पौधा लगाकर उसे विराट नाम दिया। कहा यह पौधा भी आपकी साधना के साथ-साथ विराट रूप धारण करते हुए आपको प्रेरणा देता रहेगा। —**राजसिंह आर्य**

शोक समाचार

दिनांक 03 फरवरी 2013 को श्रीमती प्रेम आर्या धर्मपत्नी इंजीनियर भूपसिंह गहलौत (वरिष्ठ उपप्रधान आर्यसमाज सिरसा एवं मन्त्री वेदप्रचार मण्डल सिरसा) का स्वर्गवास हो गया। उनका अन्त्येष्टि संस्कार 03 फरवरी 2013 को शिवपुरी सिरसा में वैदिक रीति से आचार्य परमजीत शास्त्री द्वारा करवाया गया। 10 फरवरी 2013 को प्रात: सारे परिवार ने मिलकर श्री सेवाराम शास्त्री द्वारा वैदिक रीति से हवन किया गया। बाद में शोकसभा का आयोजन किया गया जिसमें परिवार के सभी सदस्यों, रिश्तेदारों व सिरसा के गणमान्य व्यक्तियों के इलावा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा रोहतक से श्री सत्यवीर शास्त्री सभामन्त्री, श्री जिलेसिंह आर्य (पूर्व सभा कोषाध्यक्ष), श्री अत्तरसिंह स्नेही सभा पुस्तकाध्यक्ष, श्री जगदीश सींवर शेखूपुरिया सिरसा, डॉ० रणधीर सिंह सांगवान इस मौके पर पहुँचे तथा सभी को प्रीतिभोज करवाया गया।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन.... प्रथम पृष्ठ का शेष.....

महासम्मेलन में मौसम की बाधक प्रतिकूलता के बावजूद भी बड़ी संख्या में आबालवृद्ध (अनुमानत: छह हजार) आर्य नर-नारी प्रान्त के अलग-अलग स्थानों से, समीपवर्ती, दूरवर्ती सभी जगहों से आकर शामिल हुये जो सुबह 9 बजे से सायं 5 बजे तक सभा-स्थल पर डटे रहे। उनका उत्साह देखते ही बनता था।

इस अवसर पर युवाओं की बड़ी अच्छी भागीदारी रही जो हम सबके लिये बड़ी उत्साहवर्द्धक है। आर्यसमाज की युवाशक्ति अपने दायित्वों, सामाजिक सरोकारो, प्रतिबद्धता एवं प्राथमिकताओं को लेकर सचेत है, जागरूक है, सक्रिय है, यह शुभ संकेत है। वैदिक कन्या गुरुकुल ऐंचरा कलां (जीन्द) की छात्राओं द्वारा सरस्वती-वन्दन की प्रस्तुति तथा बाल भारती (पानीपत) की छात्राओं द्वारा प्रस्तुत किया गया गीत भी बहुत सराहनीय था। कन्या गुरुकुल ऐंचरा कलां की संचालिका बहन संतोषार्या सदा ही बढ़-चढ़कर सहयोग देती हैं। सभा प्रस्तोता मा० रायसिंह आर्य द्वारा लिखित लघु-पुस्तिका 'आर्य आदर्श भजनावली' का विमोचन पूज्य आचार्य बलदेव जी के करकमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। पूज्य आचार्य बलदेव जी के आशीर्वाद के साथ महासम्मेलन का समापन हुआ। सभा प्रधान आचार्य विजयपाल जी की प्रारम्भ से अंत तक मञ्च पर गरिमामयी उपस्थिति भी अपने आप में एक शुभाशीर्वाद ही था। डॉ० राजपाल, मा० रामपाल जी दहिया, सभा-कोषाध्यक्ष सूबेदार करतारसिंह, महोपदेशक श्री सुखदेव जी शास्त्री, प्रान्तीय आर्य वीर दल के संचालन श्री उमेदसिंह शर्मा, पूर्व सरपंच श्री मांगेराम डीघल तथा अन्य कई विद्वज्जन, साधु-संन्यासी भी मञ्च की शोभा बढ़ा रहे थे। प्रान्तीय आर्य वीर दल के महामन्त्री श्री वेदप्रकाश आर्य ने भी व्यवस्था संभालने में अपना योगदान दिया। यज्ञ की, बैठने की, भोजन की, पार्किंग, पानी आदि की सभी व्यवस्थायें अत्यन्त सन्तोषजनक थी। सभा के सभी कर्मचारियों ने अपनी-अपनी ड्यूटी बहुत ही ईमानदारी एवं तत्परता से निभाई, इस कर्त्तव्य-निष्ठा के लिये सभी कर्मचारी धन्यवाद के पात्र हैं।

उक्त तीनों सम्मेलनों (वेद, राष्ट्ररक्षा, गोरक्षा) में कई अत्यन्त महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव भी सर्वसम्मति से पारित किये गये जो 'पत्रिका' में अलग से प्रकाशित कर दिये जायेंगे। अन्त में यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि यह महासम्मेलन एक अत्यन्त सफल एवं सार्थक महासम्मेलन था जो आर्यजनों में एक नई ऊर्जा, नये उत्साह, आत्मविश्वास का संचार करेगा और हमारा यह संकल्प अवश्य साकार होगा कि—

दीप प्रज्वलित हो चुका है,
अन्धकार मिटाकर ही रहेगा।
कारवाँ पथ पे चल पड़ा है,
मंजिल पे जाकर ही रहेगा।

शांतिपाठ के साथ महासम्मेलन का विसर्जन हुआ सबका पुन:-पुन: धन्यवाद।

सम्पर्क—जवाहरनगर, पटियाला चौक, जीन्द-126102 (हरयाणा) मो० 09416294347, फोन 01681-226147

* ओ३म् *

मैं मुक्ति का पथिक बनूँ

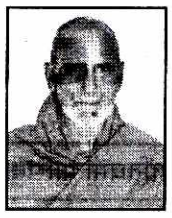

-: वेद-मन्त्र :-

यत्रानन्दाश्च मोदाश्च मुदः प्रमुद आसते।
कामस्य यत्राप्ताः कामास्तत्र माममृतं कृधीन्द्रायेन्दो परि स्रव॥

(ऋ० 9.113.11)

अर्थ—(यत्र) जहाँ (आनन्दाश्च मोदाश्च) आनन्द और हर्ष देने वाली सिद्धियाँ हैं (मुदः प्रमुद आसते) आनन्दित और हर्षित मुक्त पुरुष विराजमान हैं (कामस्य यत्र आप्ताः कामाः) जहाँ जिस वस्तु की कामना की जाती है वह संकल्प मात्र से ही प्राप्त हो जाती है। (तत्र माममृतं कृधि) उस लोक में मुझे मुक्ति का पथिक बनाइए। (इन्द्राय इन्दो परिस्रव) हे दयालु परमेश्वर! इस (इन्द्राय) जीव पर (परिस्रव) दया, कृपा दृष्टि कीजिये।

सुख की इच्छा सभी करते हैं। दुःखी कोई रहना नहीं चाहता। जो इन्द्रियों के प्रतिकूल हो उसे दुःख कहते हैं। **तृष्णार्ति प्रभवं दुःखम्** (महा०शा० 25.22) तृष्णा अर्थात् इच्छाओं की पूर्ति न होने से जो पीड़ा होती है वही दुःखों का कारण है। **नास्ति राग समं दुःखम्** (महा०शा० 175.35) किसी विषय में आसक्ति या राग दुःखों का प्रधान कारण होता है। **प्रसृतैरिन्द्रियैर्दुःखी** (महा०शा० 204.9) इन्द्रियों के विषयों में फँसा हुआ मनुष्य दुःखी रहता है। **सर्वं परवशं दुःखम्** (मनु०) **पराधीन सपने ; सुख नाहीं।** दुःख के ये लक्षण सामान्य जनों के लिए बतलाये हैं। योगदर्शन में कहा है—**परिणाम ताप संस्कार-दुःखैर्गुणवृत्ति विरोधाच्च दुःखमेव सर्वं विवेकिनः** (योग० 2.15) परिणाम, ताप, संस्कार दुःख और सत्त्व, रज, तम गुणों के स्वभावों में परस्पर विरोध होने से विवेकी जन के लिये सब लौकिक सुख भी दुःख के समान ही हैं। भोगों को भोगने से इन्द्रियाँ और अधिक चपल हो जाती हैं और वे उससे भी अच्छे पदार्थ की इच्छा करती हैं। इसे परिणाम दुःख कहते हैं। व्यक्ति लौकिक सुखों की प्राप्ति के लिये जो उसके अनुकूल हैं, उन पर अनुग्रह और बाधक तत्त्वों को हटाने के लिये हिंसादि भी करता है। इसके अतिरिक्त व्यक्ति यह भी चाहता है कि आज जो उसके पास सुख के साधन हैं वे कभी समाप्त न हो जाये। यह चिन्ता उसे सदैव संतप्त करती रहती है। यह ताप दुःख है। जो भोगे जा रहे हैं उनका संस्कार चित्तभूमि पर पड़ता रहता है। इन्हीं संस्कारों से अगला जन्म मिलता है और व्यक्ति के जैसे संस्कार हैं, वैसे ही कर्म करता है। इस प्रकार वृत्ति, कर्म, संस्कार का यह चक्र चलता ही रहता है। इसे संस्कार दुःख कहते हैं। चित्त में सत्त्व, रज, तम तीनों गुण गौण-प्रधान भाव से बने रहते हैं। जब सत्त्व गुण प्रधान होता है तो रज, तम भी कुछ मात्रा में वहां होते ही हैं जिसके कारण सुख की स्थिति में भी कुछ मात्रा में दुःख भी उसमें मिश्रित रहता है। इसका नाम गुण वृत्ति विरोध दुःख है। जैसे मकड़ी का जाला आँख में पड़ जाये तो पीड़ा का कारण बनता है, अन्यत्र नहीं ऐसे ही सुकोमल चित्त वाले विवेकी जन को ही ये सांसारिक सुख पीड़ित करते हैं, सामान्य लोगों को नहीं।

इन सभी वेदनाओं और दुःखों की निवृत्ति योगाभ्यास से होगी जैसा कि चरक संहिता में कहा है—

योगे मोक्षे च सर्वासां वेदनानामवर्तनम्।
मोक्षे निवृत्तिर्निश्शेषा योगो मोक्ष प्रवर्तकः॥ (चरक० शा० 1.22)

योग और मोक्ष ही सर्वविध दुःखोंको दूर करने के उपाय हैं। इनकी सम्पूर्ण निवृत्ति मोक्ष प्राप्त कर लेने पर ही होती है। योग मोक्ष का प्रवर्तक अर्थात् प्राप्त कराने वाला है। परमेश्वर की आज्ञा पालने, अधर्म, अविद्या, कुसंग, कुसंस्कार, बुरे व्यसनों से अलग रहने और सत्यभाषण, परोपकार, विद्या, पक्षपात रहित न्याय-धर्म की वृद्धि करने, पूर्वोक्त प्रकार से परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना अर्थात् योगाभ्यास करने, विद्या पढ़ने-पढ़ाने और धर्म से पुरुषार्थ कर ज्ञान की उन्नति करने, सबसे उत्तम साधनों को करने और जो कुछ करे वह सब पक्षपात रहित, न्याय-धर्मानुसार ही करे, इत्यादि साधनों से मुक्ति और इनसे विपरीत ईश्वराज्ञा भंग करने आदि काम से बन्ध होता है (सत्यार्थ० नवम० समु०)।

मुक्ति में भौतिक शरीर या इन्द्रियों के गोलक जीव के साथ नहीं रहते किन्तु अपने स्वाभाविक शुद्ध गुण रहते हैं जिनके द्वारा वह मुक्ति के आनन्द को भोगता है। मन्त्र कहता है—**यत्रानन्दाश्च मोदाश्च मुदः प्रमुद आसते** जहाँ आनन्द और आनन्द देने वाले पदार्थ हैं, जहाँ मुक्ति के आनन्द को प्राप्त मुक्तात्मा पुरुष विराजमान हैं। **कामस्य यत्राप्ताः कामा तत्र माममृतं कृधि** जहाँ संकल्प मात्र से ही सब कामनाओं की तृप्ति हो जाती है, उस लोक का मुझे पथिक बनाइये।

जैसे सांसारिक सुख शरीर के आधार से जीव भोगता है वैसे परमेश्वर के आधार मुक्ति के आनन्द को जीवात्मा भोगता है। वह मुक्त जीव अनन्त व्यापक ब्रह्म में स्वच्छन्द घूमता, शुद्ध ज्ञान से सब सृष्टि को देखता, अन्य मुक्तों के साथ मिलता, सृष्टि विद्या को क्रम से देखता हुआ सब लोक-लोकान्तरों में अर्थात् जितने ये लोक दीखते हैं और नहीं दीखते, उन सब में घूमता है। सब पदार्थों को जो कि उसके ज्ञान के सामने हैं, सबको देखता है। जितना ज्ञान अधिक होता है, उसको उतना ही आनन्द अधिक होता है। मुक्ति का समय छत्तीस सहस्र बार सृष्टि की उत्पत्ति और प्रलय का जितना समय होता है, उतने समय पर्यन्त आत्मा मुक्ति का आनन्द भोगता है (स०प्र० नव०समु०)।

पवित्रता

जितना-जितना मनुष्य पवित्रता को धारण करता है उतना-उतना ही आनन्द अधिक प्राप्त करता हुआ मुक्ति के समीप जाता है। पवित्रता प्राप्त करने हेतु देने का स्वभाव बनाना चाहिये। किसी से प्राप्ति की इच्छा न करे। चोरी करने व दूसरे की सम्पत्ति को लूटने का यत्न न करे। दो सगे भाई प्रेम से रहते थे। घर में कलह न हो इसलिये पृथक्-पृथक् हो जाये। एक दिन दोनों के गेहूँ के ढेर बाहिर खेत में पड़े थे। छोटे भाई की पर्याय गेहूँ की रक्षा की आ गई। उसने विचार किया कि बड़ा भाई अधिकांश बाहिर रहता है। उसका परोपकार करने में अधिक समय व्यतीत होता है। उसने 5 मन अपने गेहूँ बड़े भ्राता के गेहूँ में मिला दिये। दूसरी बार बड़े भाई की पर्याय आई। उसने विचार किया कि छोटा भाई छोटा होने के कारण सहायता के योग्य है। उसी प्रकार बड़े भाई ने छोटे भाई के गेहूँ में 5 मन अपने गेहूँ मिला दिये। इस प्रकार देने की प्रवृत्ति से दोनों में प्रेम का आनन्द बढ़ा। उपासक व दानी बनना ही मनुष्य के लिये मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करता है।

—आचार्य बलदेव

आभार प्रदर्शन

विपरीत वातावरण में भी जो आप आर्यों ने आशातीत भारी संख्या में पधार कर **'हरयाणा प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन'** को ऐतिहासिक सफलता प्रदान की है, इसके लिये आप सबको हार्दिक धन्यवाद व बधाई।

—आचार्य बलदेव

यज्ञशाला का उद्घाटन

स्वर्गीय वैद्य धर्मपाल जी स्वतंत्रता सेनानी का तेरहवां पुण्य स्मृति एवं प्रेरणा दिवस प्रतिवर्ष की भांति दिनांक 10.02.2013 को उनके परम शिष्य वैद्य जगन्नाथ जी के निवास स्थान गांव खानपुर कलां (सोनीपत) में बड़े हर्षोल्लास के साथ हवन-यज्ञ के साथ मनाया गया।

यज्ञ के ब्रह्मा डॉ० दिव्यानन्द जी सरस्वती हरिद्वार थे। उनके गांव में पधारने पर समाजसेवी डॉ. सी.डी. शर्मा, इन्द्रसिंह भनवाला, श्री देवप्रकाश, सरपंच अशोक कुमार, हरिश्चन्द्र जी कर्नाटक, पारिवारिक सदस्यों तथा यज्ञप्रेमी गांव-वासियों ने फूल-मालाओं के साथ स्वागत किया। नवनिर्मित यज्ञशाला का अपने कर-कमलों से उद्घाटन किया और यजमान के रूप में वैद्य जी के रिश्तेदार पालमवासी नवदम्पति नरेश व वर्षा विराजमान थे।

यज्ञ कार्यक्रम के बाद अनेक धार्मिक व समाजसेवी लोगों ने यज्ञ के महत्त्व तथा वैद्य धर्मपाल जी के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। उनके सेवाकार्यों को निरन्तर आगे बढ़ाने के लिए वैद्य जगन्नाथ जी को भी साधुवाद दिया गया। श्री तेजवीर आर्य भजनोपदेशक ने अपने भजनों व गायन कला से सभी श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया था।

इस शुभ अवसर पर स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती ने अपने प्रेरक उद्बोधन में उपस्थित यज्ञ-प्रेमियों को यज्ञ व गाय की महिमा के बारे में विस्तार से समझाया। स्वामी जी ने वैद्य जगन्नाथ जी के परिवार के युवाओं को इस स्वस्थ परम्परा का निरन्तर पालन करते रहने के लिए प्रेरित किया।

अन्त में वैद्य जगन्नाथ जी ने अपने व सहयोगियों के कर-कमलों से स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती, सुखदेव शास्त्री, स्वामी महानन्द तथा भजनोपदेशक तेजवीर जी को दक्षिणा भेंट की।

—देवप्रकाश आर्य,
खानपुर कलां, जिला सोनीपत

महान् देशभक्त : लाला लाजपतराय

❑ सहदेव समर्पित, संयुक्त सम्पादक, शांतिधर्मी मासिक, जींद 94162 53826

भारतवर्ष की आजादी की लड़ाई में जनभावनाओं के केन्द्र-बिन्दु बने बाल-लाल-पाल देश के अग्रगण्य नेता थे। लोकमान्य बालगंगाधर तिलक, पंजाब केसरी लाला लाजपतराय और बंगाल के सपूत-विपिनचन्द्र पाल। यह त्रिकोण एक समय ब्रिटिश साम्राज्य के लिए आतंक का पर्याय बन गया था। सरकारी तंत्र इन तीनों के नाम से काँपता था। अंग्रेज सरकार इन तीनों को अपने साम्राज्य के लिए बहुत बड़ा खतरा मानती थी। 7 मई 1907 को ब्रिटेन में भारत-मंत्री लार्ड मार्ले को भारत के वायसराय लार्ड मिंटों ने एक गुप्त रिपोर्ट भेजी थी-1857 के संग्राम के अर्द्धशताब्दी वर्ष के विचार में अंग्रेज अत्यधिक आशंकित थे। इस रिपोर्ट में मुख्यत: पंजाब केसरी लाला लाजपतराय के सम्बन्ध में सर्वाधिक आशंका व्यक्त की गई थी, जिसके कारण लाला लाजपतराय की मातृसंस्था का भी इसमें उल्लेख हुआ था-। ''इस समस्त प्रचार का संचालन तथा संगठन आर्यसमाज की एक गुप्त समिति द्वारा होता है। यह संस्था आरम्भ में तो धार्मिक थी, परन्तु पंजाब में इसकी प्रबल राजनैतिक प्रवृत्ति है।'' लाला जी का उल्लेख इसमें इस क्रान्ति के सूत्रधार के रूप में किया गया- ''इसके समस्त आन्दोलन के केन्द्र तथा आदिस्रोत एक खत्री वकील लाला लाजपतराय हैं, जो पंजाब के कांग्रेस प्रतिनिधि के रूप में इंग्लैंड भी हो आए हैं, वे क्रान्तिकारी हैं और उनके हृदय में अंग्रेजी राज्य के प्रति घृणा कूट-कूट कर भरी है। वह स्वयं तो चतुरता से पीछे-पीछे रहता है, परन्तु सभी देशी सज्जनों ने विश्वास दिलाया है कि मुख्य संचालक वही है।''

लाला जी के बारे में, एक अंग्रेज वायसराय की रिपोर्ट, निश्चित रूप से उनके वास्तविक व्यक्तित्व का मूल्यांकन नहीं हो सकती, जो कि प्रबल आततायी साम्राज्य से प्रखर तेजस्विता के साथ संघर्ष कर रहे थे, लेकिन इससे उनके प्रखर व्यक्तित्व, बहुक्षेत्रीय संघर्ष क्षमता और अदम्य राष्ट्रवादिता का परिचय तो मिलता ही है। ''लालाजी के काम करने के दो तरीके हैं- एक तो फौजी छावनियों में जाकर बगावत फैलाना और दूसरे देहात में उन लोगों के बीच में जाकर-जिनमें से प्राय: सेना में भरती होती है, उनमें ब्रिटिश साम्राज्य के प्रति घृणा फैलाना।'' इसी रिपोर्ट में लालाजी पर यह आरोप भी लगाया गया था कि वे काबुल के अमीर से गुप्त रूप से मिले थे, उन्हें ब्रिटिश भारत पर आक्रमण के लिए उकसाया था और भारतीय जनता द्वारा पूर्ण समर्थन देने का आश्वासन दिया था। मांडले जेल में एक अंग्रेज अफसर ने भी लालाजी को कहा था-''आपने सेनाओं को बरगलाया था और ब्रिटिश सरकार आपको दूसरा नाना साहब समझती है।''

बहुआयामी व्यक्तित्व : शासन के लिए खतरा बने एक देशभक्त क्रान्तिकारी के प्रति इन वक्तव्यों से लालाजी की सामाजिक क्षमता और संगठन शक्ति का अहसास तो होता ही है, लेकिन यह उनके बहुआयामी व्यक्तित्व का एक हिस्सा भर है। इसके मूल में लालाजी का वह प्रभावशाली व्यक्तित्व था जिसके एक आह्वान पर जन-जन का जोश उमड़ पड़ता था। मातृभूमि के लिए अपना बलिदान देने को तत्पर एक व्यक्तित्व, जिसने कभी अपने हाथ में हथियार नहीं उठाया, अंग्रेज सरकार जिन्हें कांग्रेस में तथाकथित गरमदल का नेता मानती थी, एक अत्यन्त संवेदनशील लेखक और वक्ता तथा दु:खियों के दु:ख में आर्द्रहृदय मानव सेवी भी था। गेहुँआ रंग, ऊँचा-पूरा-तगड़ा शरीर, आनन और तन पर नाजुकता का लवलेश नहीं। बिना ध्वनि-विस्तारक के हजारों लोगों के कानों और ब्रिटिश साम्राज्य के हृदय को वेधती ऊँची आवाज, जिसे सुनने वाले अपनी भुजाओं में मछलियाँ फ ड़कतीं अनुभव करते। छत्रपति शिवाजी, पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी और ऋ षि दयानन्द, सम्राट् अशोक, गैरीबाल्डी और मैजिनी के जीवन चरित्र तथा माण्डले के निर्वासन काल में लिखा गया आर्यसमाज का इतिहास उनकी उत्कृष्ट साहित्यिक रचनाएँ हैं। उत्तर प्रदेश के और राजस्थान के अकाल हों या उड़ीसा और मध्यप्रदेश के दुर्भिक्ष अथवा कांगड़ा का भूकम्प, मानवता के क्रन्दन पर लाजपतराय रो उठते थे और इसी कारण इन आपत्तियों में आपने पीड़ित मानवता की जो सेवा की, वह इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित करने योग्य है। ईसाईयों मिशनरियों ने इन अवसरों पर गरीब जनता की बेबसी का लाभ उठाकर उन्हें धर्मान्तरित करना चाहा तो लालाजी ने अनाथ बच्चों के लिए लाहौर, फिरोजपुर और मेरठ और भिवानी में अनाथालय खुलवा दिए। तपेदिक के रोगियों के लिए अपनी स्वर्गीय पत्नी की स्मृति में लाहौर में गुलाबदेवी तपेदिक अस्पताल की स्थापना की। पत्रकारिता के क्षेत्र में नए आयाम स्थापित करते हुए 'वन्देमातरम्' और 'पीपुल' जैसे लोकप्रिय पत्रों का प्रकाशन सम्पादन किया। इस प्रकार लाला लाजपतराय का व्यक्तित्व एक बुद्धिजीवी लेखक, पत्रकार, प्रभावशाली वक्ता, सुलझे हुए लेखक, समाज-सेवक, शिक्षाविद् गम्भीर अध्येता और चिन्तक, संवेदनशील दयालु परोपकारी, धर्मरक्षक, प्रजापालक, प्रगतिशील नेता का संतुलित समन्वित रूप था।

व्यावसायिक स्वच्छता और सफ लता-लालाजी का पेशा वकालत का था। वे अपने समय के सफ लतम वकीलों में गिने जाते थे। जगराँव, हिसार और लाहौर में लम्बे समय तक वकालत की। हिसार के तो आप सफ लतम श्रेष्ठ वकील थे। आर्यसमाजियों के वक्तव्यों पर न्यायाधीशों द्वारा विश्वास करने की धारणा भी सम्भवत: मुंशीराम व लाजपतराय जैसे वकीलों के कारण बनी होगी। हिसार में रहते आपके प्रयत्नों से ही प्रसिद्ध आर्यसमाज नागौरी गेट (अब लाजपतराय चौक) का निर्माण हुआ।

आर्यसमाज से सम्बन्ध-लाला लाजपतराय के पूज्य पिता लाला राधाकृष्ण सरकारी प्राईमरी स्कूल में अध्यापक थे। वे अग्र वंशज होने पर भी इस्लाम से बहुत प्रभावित थे। वैश्य और जैनी होने के कारण मांस तो नहीं खाते थे। नमाज नित्य नियम से पढ़ते, रोजे रखते, कुरान का पाठ करते और मुस्लिमों जैसी वेशभूषा रखते थे। इतना होने पर भी उन्हें अन्य धार्मिक ग्रन्थों के स्वाध्याय में भी गहरी रूचि थी। लाला लाजपतराय को अध्ययन के समय पं० गुरुदत्त विद्यार्थी, महात्मा हंसराज आदि क्रान्तिकारी इतिहास पुरुषों का सान्निध्य मिला। लाला साईंदास की प्रेरणा से आप आर्यसमाज के सदस्य बने। फि र तो आपकी आस्था दृढ़तर होती चली गई। महर्षि दयानन्द के बलिदान के उपरान्त जब लाहौर में आर्य समाजियों ने ऋषि की स्मृति को चिरस्थायी बनाने के लिए डीएवी की स्थापना का निश्चय किया तब लालाजी भी उनमें से एक थे। वर्षों तक कालेज की प्रबन्ध समिति के उपप्रधान व मंत्री रहे। कालेज के लिए जी तोड़ मेहनत की। नगर-नगर घूमकर अपनी वक्तृत्व कला के द्वारा लोगों तक डीएवी का कार्यक्रम पहुँचाया और पर्याप्त धन संग्रह भी किया। जहाँ भी रहे, आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार के लिए तत्पर रहे। हिसार में तो आपके घर पर ही प्राय: साप्ताहिक सत्संग होते थे।

लालाजी इस बात को हृदय से स्वीकार करते थे कि आर्यसमाज के कारण ही वे जीवन की बुलन्दियों पर पहुँचने में समर्थ हुए हैं और इस बात को उन्होंने कभी सार्वजनिक रूप से भी स्वीकार करने में संकोच नहीं किया। आर्यसमाज के वे सदैव कृतज्ञ रहे और अपनी आत्मकथा में इस कृतज्ञता को इस प्रकार प्रकट किया-

''आर्यसमाज के उपकार मेरी गर्दन पर अनगिनत, असीम हैं। अगर मेरा बाल-बाल आर्यसमाज पर न्यौछावर हो जाए, तो भी मैं उसके उपकारों से उऋ ण नहीं हो सकता। यदि मैं आर्यसमाज में दाखिल न होता तो ईश्वर ही जाने मैं क्या होता। मगर यह सच है कि मैं आज जो कुछ हूँ, वह न होता।''

राष्ट्रीय आन्दोलन-राष्ट्रीय आन्दोलन में प्रारम्भिक काल में महात्मा गांधी की नीतियों में सहयोगी होने के बावजूद भी कुछ मामलों में लालाजी के गाँधीजी से तीव्र मतभेद अवश्य दिखाई देते हैं। यद्यपि देखा जाए तो लाला लाजपतराय गाँधीजी से पूर्व पीढ़ी के नेता हैं। 1906 में गोपाल कृष्ण गोखले के साथ कांग्रेस के प्रतिनिधि के रूप में विदेश यात्रा की और भारत की आजादी के लिए संघर्ष की पृष्ठभूमि तैयार की। इसके अतिरिक्त 1907 में पंजाब के किसान आन्दोलन का नरपुंगव सरदार अजीतसिंह के साथ नेतृत्व कर चुके थे। सरदार अजीत सिंह क्रान्ति की धधकती ज्वाला थे। आप दोनों ने अपने दहकते भाषणों से आन्दोलन में जान फूंक दी थी। यह अंग्रेज की भी योजना थी कि कांग्रेस का नेतृत्व ऐसे राष्ट्रवादियों के हाथ में न जाने पाए। प्रथम विश्व युद्ध के समय आपके भारत प्रवेश पर रोक लगा दी गई थी। तभी कांग्रेस का नेतृत्व गाँधीजी

क्रमश: पृष्ठ पाँच पर....

यज्ञकर्ता की परमेश्वर रक्षा करता है

❑ डॉ० अशोक आर्य, जी. 7, शिप्रा अपार्टमेंट, कौशाम्बी, जिला गाजियाबाद

मानव अपने जीवन में अपरिमित सुखों की कामना करता है। सुख तब ही मिलते हैं जब वह अपने जीवन को इस ढंग से चलावे कि उसे सदा ही सुख मिले। अपने जीवन को यज्ञमय बनाना ही...सुखों की प्राप्ति का मुख्य साधन है। इस साधन की प्राप्ति के लिए जिस प्रकार यज्ञ सबके लिए हितकर होता है, हम भी स्वयं को सर्वजनहिताय बनावें। प्राणायाम के माध्यम से शरीर को तपाकर जितेन्द्रिय बनावें। जितेन्द्रिय बने बिना हम कभी भी यज्ञमय नहीं बन सकते तथा जितेन्द्रिय बनने पर ही हम अपने आपको यज्ञमय बनाकर उस प्रभु की दृष्टि में ऊँचा उठकर उच्च बना सकते हैं। तब ही वह पिता हमारी रक्षा करने को आगे आता है। इस तथ्य को सामवेद के मन्त्र संख्या 16 में इस प्रकार कहा है—

प्रति त्यं चारुमध्वरमगोपीथाय प्रहुयसे। मरुद्भिरग्न आगाही॥

1. यज्ञ ही जीवन का प्रथम व आवश्यक कर्म हो—हे अग्ने! आपको हम उस चारणीय तथा करने योग्य हिंसा रहित यज्ञ में हमारी इन्द्रियों की रक्षा करने के लिए पुकारते हैं। यह मनुष्य का पुनीत कर्त्तव्य है कि वह अपनी प्रत्येक इन्द्रिय से उत्तम व पुनीत यज्ञ आदि कर्म करे। मनुष्य की दिनचर्या में यज्ञ का मुख्य स्थान रहे। यज्ञ के बिना वह कुछ भी ग्रहण न करे। यज्ञ ही जीवन का आवश्यक कर्म हो। यही मनुष्य का प्रथम कर्त्तव्य है। इस सब तथ्य को इस मन्त्र में चारु शब्द के अन्तर्गत लिया गया है।

2. हमारा कोई भी कार्य हिंसक प्रवृत्ति का न हो—हमारे लिए प्रतिदिन यज्ञ को जीवन का, दैनिक व्यवस्था का प्रथम कर्त्तव्य निर्धारित किया है। हमारी प्रत्येक गतिविधि की, प्रत्येक कार्य की सदा यह प्रवृत्ति हो कि हम अपने कार्य अहिंसक रूप में करें। हिंसा को पास न आने दें। मन्त्र भी अध्वर के माध्यम से मन्त्र कहता है कि हिंसा ना ही करें। वेद तो सबका भला चाहता है, जो हिंसा से नहीं हो सकता। इसलिए सबका भला करने के लिए हमें ऐसे ढंग अपनाने होते हैं जिससे सब प्राणियों का भला हो। यही हमारे कार्य की श्रेष्ठता तथा यही यज्ञरूपता की कसौटी है।

शेष अगले अंक में....

प्रार्थना

1. सभी आर्यसमाजों के अधिकारियों से प्रार्थना की जाती है कि वे इसी फरवरी मास व मार्च में अपने वार्षिक महोत्सव सम्पन्न करें।
2. अपनी समाज में साप्ताहिक सत्संग में सपरिवार सदस्यों को पधारने की प्रेरणा करें।
3. प्रत्येक जिले में मासिक सत्संग का आयोजन करें।
4. प्रत्येक समाज 3 सप्ताह पारिवारिक सत्संग करें तथा चौथे सप्ताह में आर्यसमाज में सत्संग करें।

—आचार्य बलदेव

शोक समाचार

दयानन्दमठ रोहतक के पूर्व मंत्री बाबू मामनसिंह सैनी का दिनांक 16.2.2013 को लगभग 88 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। वे गत कई मास से बीमार चल रहे थे। जिस समय स्वामी ओमानन्द जी दयानन्दमठ रोहतक के प्रधान थे, उस समय उनके साथ दयानन्दमठ व आर्यसमाज के कार्यों में बहुत सहयोग देते थे। उनके निधन से आर्यसमाज की अपूरणीय क्षति हुई है।

परमात्मा दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा उनके परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा उनके निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करती है।

—सभामन्त्री

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1.	महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर	9 से 10 मार्च 2013
2.	आर्यसमाज सफीदों जिला जीन्द	15 से 17 मार्च 2013
3.	आर्यसमाज आहुलाना जिला सोनीपत	19 से 21 मार्च 2013
4.	आर्यसमाज शेखपुरा खालसा जिला करनाल	22 से 24 मार्च 2013
5.	आर्यसमाज गोहाना मण्डी जिला सोनीपत	22 से 24 मार्च 2013
6.	दयानन्दमठ दीनानगर (पंजाब)	1 से 13 अप्रैल 2013

—प्राचार्य अभय आर्य, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता

महान् देशभक्त लाला लाजपतराय..... पृष्ठ 4 का शेष.....

के हाथों में आया था। लाजपतराय 1888 में ही कांग्रेस आन्दोलन से जुड़ चुके थे। 1907 के प्रसिद्ध किसान आन्दोलन के कारण ही, जब सरकार प्रबल जन समर्थन के कारण आपका वकालत का लाईसैंस जब्त न कर सकी, 9 मई 1907 को आपको नाटकीय तरीके से गिरफ्तार कर लिया गया। बिना किसी तार्किक कारण के आपको व सरदार अजीत सिंह को निर्वासन का दण्ड दे दिया गया। बर्मा की माण्डले जेल में होते हुए दोनों एक दूसरे से मुलाकात भी नहीं कर पाते थे। अभिन्न सहयोगियों को भी संवेदनहीन विडम्बनाओं ने इतना दूर कर दिया था। इस प्रकार की मानसिक प्रताड़नाएँ देश दिवानों के लिए आम बात थी। प्रबल जनाक्रोश के कारण और पर्याप्त साक्ष्यों के अभाव में आखिर 11 नवम्बर को ही सरकार को इन दोनों नरसिंहों को मुक्त करना पड़ा।

गाँधीजी की तुष्टिकरण की नीतियों और आजादी के प्रति ढुलमुल रवैये ने लालाजी को भी असंतुष्ट कर दिया था। राष्ट्रीय महासभा में कांग्रेस के सीमित स्वराज्य के लक्ष्य का लालाजी ने प्रबल विरोध किया था। 1905 में बनारस कांग्रेस के अधिवेशन में ब्रिटिश युवराज के आने का भी आपने ही विरोध किया था। हालांकि कांग्रेस के अवज्ञा आन्दोलन असहयोग आदि कार्यक्रमों में लाला जी का अविस्मरणीय योगदान इतिहास के पन्नों में सुरक्षित है, परन्तु साम्प्रदायिक तुष्टिकरण, स्पष्ट लक्ष्य का अभाव आदि मुद्दों पर लालाजी अपना विरोध दर्ज कराने में कभी नहीं चूके और संभवतः इन्हीं कारणों से ये मतभेद बढ़ते-बढ़ते इतने बढ़ गए कि आपने कांग्रेस का त्याग कर दिया। पंजाब में लालाजी की जनप्रियता का प्रमाण यह था कि स्वराज पार्टी की ओर से ही लाला जी केन्द्रीय असैम्बली के लिए पंजाब में दो स्थानों से भारी बहुमत से निर्वाचित हुए।

साईमन कमीशन—1928 के 30 अक्तूबर को यह कमीशन लाहौर आया था। यह ब्रिटिश सरकार द्वारा नियुक्त कमीशन यह जाँच करने के लिए आया था कि भारतीय अभी स्वतंत्रता के योग्य हुए हैं या नहीं। पूरे देश में इसके बहिष्कार की तैयारियाँ की गई। लाहौर के रेलवे स्टेशन पर लालाजी के नेतृत्व में जबरदस्त प्रदर्शन हुआ। जलूस यद्यपि शांत था, लेकिन अंग्रेज अधिकारियों को इससे कुछ लेना-देना न था। तथापि लगता यह था कि उनको सरकारी निर्देश था। बिना किसी चेतावनी के लाठीचार्ज प्रारम्भ हो गया, लोगों में भगदड़ मच गई। कुछ भागे कुछ खड़े रहे। लाठीचार्ज में लालाजी पर स्वयं सीनियर सुपरिटेण्डेंट स्काट व साण्डर्स ने लाठियाँ बरसाई। लाला जी जैसे 63 वर्षीय बुजुर्ग नेता पर लाठियाँ बरसाकर शायद वे अपनी क्रूरता का लोहा मनवाना चाहते थे। इसी क्रम में लाला जी की छाती पर घातक प्रहार हुए जो उनके बलिदान का कारण बन गए। गंभीर रूप से घायल अवस्था में भी लालाजी के लिए निष्क्रिय होना सम्भव न था। वे निरन्तर सक्रिय रहे। उसी दिन लाला जी ने उसी शाम एक सार्वजनिक सभा में सिंह गर्जना की थी-"मेरे शरीर पर पड़ी लाठी की एक-एक चोट ब्रिटिश साम्राज्य के कफन की कील सिद्ध होगी।"

प्रेरक महा बलिदान-इन्हीं घातक चोटों के कारण 17 नवम्बर को प्रातःकाल लाला जी का महाप्रयाण हो गया। जन-मानस भावुक हो उठा। देश में शोक की लहर दौड़ गई। यह भारत के स्वाभिमान पर चोट थी, हालांकि देश के स्वाभिमान के प्रतीक भगत सिंह व उनके साथियों ने साण्डर्स को उड़ाकर कुछ हद तक इन घावों पर मरहम लगाई थी। पर देश एक अद्वितीय नेता से वंचित तो हो गया, जो एक अपूरणीय क्षति थी।

लालाजी जैसे अदम्य साहसी और बहुमुखी प्रतिभा के स्वामी युगपुरुष कभी-कभी ही पैदा होते हैं। लालाजी का पूरा जीवन देश और समाज के लिए समर्पित रहा। लालाजी के जीवन को निकट से देखने वाले ब्रिटिश पत्रकार नेविन्सन ने लिखा था-

"लालाजी का जीवन तपस्या और उदारता से परिपूर्ण था। उन्होंने निर्धन तथा अशिक्षितों की सेवा के लिए, भारी सांसारिक सफलता का जीवन त्याग दिया था। वे उन पुरुषों में से थे जिनकी आत्माओं में अपने देशवासियों के दुःख प्रवेश कर जाते हैं।" स्वयं लालाजी की उक्ति भी सहेजकर आत्मसात् करने की आवश्कता है-

"अगर कोई ऐसा आदमी है जो अपनी जाति तथा देश की सेवा अपना कर्तव्य नहीं समझता तो उससे कह दो कि तुम्हें मनुष्य का शरीर तो मिला है, किन्तु तुम अभी मनुष्य नहीं बन पाए।"

हरयाणा प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में पारित प्रस्ताव

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्त्वावधान में दिनांक 17 फरवरी 2013 को सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ रोहतक में सम्पन्न हरयाणा प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में आयोजित 'वेद एवं वैदिक शिक्षा-सम्मेलन' एवं 'राष्ट्ररक्षा सम्मेलन' में प्रस्तुत तथा सर्वसम्मति से पारित प्रस्ताव—

वेद एवं वैदिक शिक्षा-सम्मेलन

प्रस्ताव संख्या-1

वेद इस धरा के प्राचीनतम, पवित्रतम तथा समस्त आध्यात्मिक, बौद्धिक, भौतिक व सामाजिक ज्ञान-विज्ञान के विश्वस्तरीय सम्माननीय ग्रन्थ रत्न है। वे सर्वविध, सार्वभौमिक, मौलिक, सत्य शिक्षाओं के कोषागार तथा भारतवर्ष की अमूल्य ईश्वरप्रदत्त पवित्र ज्ञान निधि हैं। अत: इस वेदरूपी अनुपम धरोहर की सुरक्षा का दायित्व प्रत्येक भारतीय का है। अत: यह सम्मेलन जन-जन से अपील करता है कि अपने घरों में वेदों को रखें व उनका स्वाध्याय करें-करावें।

प्रस्ताव संख्या-2

युगपुरुष, महान् समाजसुधारक, उद्भट वैदिक विद्वान् वेदों के गौरव को जनमानस में पुन: स्थापित करने वाले महर्षि दयानन्द ने सभी के लिये वेदों का पढ़ना-पढ़ाना व सुनना-सुनाना आवश्यक बताया है। अत: इस सम्मेलन के माध्यम से हम भारत सरकार से यह अपील करते हैं कि भारतीय महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालयों में वेदों के पठन-पाठन व शोध-कार्य को यथासम्भव स्थान दिया जाये।

प्रस्ताव संख्या-3

वेद भारत के जगत् विख्यात व विश्व के प्राचीनतम ग्रन्थ रत्न हैं। उनके संरक्षण व संवर्द्धन का दायित्व जहाँ प्रत्येक भारतीय का है, वहाँ भारत सरकार का भी है। अत: हम इस सम्मेलन के माध्यम से भारत सरकार से यह अपील करते हैं कि चारों वेदों का विविध भाषाओं में प्रमाणित अनुवाद कराये तथा देश के सभी पुस्तकालयों में इनकी प्रतियाँ रखी जाना अनिवार्य करे तथा समय-समय पर वैदिक ज्ञान-विज्ञान पर विद्वानों की गोष्ठियाँ आयोजित कराकर उनके निष्कर्ष जन-जन तक पहुंचावे।

प्रस्ताव संख्या-4

वेद एवं वेदांग शिक्षा परम्परा को चलाने वाली संस्थाओं व गुरुकुलों की सब प्रकार से जनता व शासन द्वारा सहायता की जानी चाहिये एवं वेदों को पढ़ने-पढ़ाने वाले तथा उन्हें कण्ठस्थ करने वाले विद्यार्थी व विद्वानों को समय-समय पर शासन व आर्य-संगठनों द्वारा सम्मानित व पुरस्कृत करना चाहिये।

प्रस्ताव संख्या-5

वेद की अमूल्य शिक्षायें जन-जन का कल्याण करने वाली हैं। वे साम्प्रदायिक व भौगोलिक सीमाओं से ऊपर हैं। वे पवित्र ज्ञान की बहती सरितायें हैं। अत: सभी प्रबुद्ध जनों एवं धार्मिक व बौद्धिक संगठनों का यह कर्त्तव्य है कि वेदों की सर्वकल्याणकारिणी शिक्षाओं का प्रचार-प्रसार करने का प्रयत्न करें। उनकी शिक्षाओं के लघु-पुस्तक संस्करण, लेख व ट्रेक्टस् छपवाकर जन-जन में वितरित करें। साथ ही सभी धार्मिक व आर्य-संगठनों से यह अपील है कि वे अपने द्वारा संचालित सभी विद्यालयों और महाविद्यालयों के पुस्तकालयों में चारों वेदों की प्रतियाँ रखें तथा बालोपयोगी वैदिक शिक्षाओं के उपदेश समय-समय पर वैदिक विद्वानों से करवायें।

राष्ट्ररक्षा-सम्मेलन

प्रस्ताव संख्या-1

राष्ट्र की भौगोलिक एवं अन्त: सुरक्षा के लिए यह सम्मेलन भारतीय समाज को राष्ट्रभक्ति की भावना से ओतप्रोत करना आवश्यक मानता है। अत: उसके लिए सभी प्रकार के रेडियो, टी.वी., सिनेमा, समाचार-पत्र-पत्रिकाओं आदि प्रचार माध्यमों के द्वारा राष्ट्रभक्ति की भावना को पुष्ट करने वाले अधिक से अधिक दृश्य तथा श्रव्य कार्यक्रम प्रस्तुत किये जाने चाहियें। इस प्रस्ताव के माध्यम से हम भारत सरकार से प्रार्थना करते हैं कि इस पर शीघ्रातिशीघ्र ध्यान दिया जावे।

प्रस्ताव संख्या-2

राष्ट्र की सुरक्षा के आधारभूत युवक-युवतियों को बाल-भाव से ही राष्ट्रीय भावना के प्रबल संस्कार दिये जाने चाहियें जिससे कि वे राष्ट्र के स्वाभिमान, उसकी सम्प्रभुता, अखण्डता तथा उसके गौरव की रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहें। उसके लिए भारतीय शिक्षा के विविध पाठ्यक्रमों में राष्ट्रीय भावना के पोषक व प्रेरक ऐतिहासिक तथ्यों व प्रसंगों को समाविष्ट किया जाना चाहिये और देश के समस्त शिक्षण केन्द्रों में आयोजित किये जाने वाले विविध मनोरंजनात्मक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में देशभक्ति से परिपूर्ण कार्यक्रम अधिक से अधिक प्रस्तुत किये जाने चाहियें।

प्रस्ताव संख्या-3

राष्ट्र की भौगोलिक सीमाओं की सुरक्षा में अपने प्राणों की बाजी लगाने वाले, अपने परिवारों से दूर कठिनतम परिस्थितियों में जीवन जीने वाले देश के महान् वीर सैनिकों को भारत सरकार द्वारा अधिक से अधिक सम्मान, सुविधा व उनके परिवारों का संरक्षण किया जाना चाहिये तथा देश की रक्षा हेतु वीरगति को प्राप्त शहीदों को उच्चस्तरीय सम्मान व उनके आश्रित जनों के संरक्षण का दायित्व सरकार को लेना चाहिये।

प्रस्ताव संख्या-4

राष्ट्र की सर्वविध सुरक्षा व उसका विकास उसके प्रबुद्ध, कर्त्तव्यनिष्ठ व योग्य नागरिक करते हैं। यदि देश के युवक-युवतियाँ व स्त्री-पुरुष रात्रि-क्लबों में शराब, स्मैक आदि के नशों में उन्मत्त होकर कामुकतावर्द्धक, अश्लीलतापूर्ण नृत्य करने में अपना समय व राष्ट्र का धन बर्बाद करते हैं तो उनका राष्ट्रीय चरित्र गिरना निश्चित है। भारतीय जनमानस में बढ़ती हुई मर्यादाहीन कामुकता व अर्थ-लोलुपता तथा शराब, स्मैक, गांजा, अफीम आदि विनाशकारी नशाखोरी की प्रवृत्ति उसके राष्ट्रभक्ति के चरित्र को निरन्तर नष्ट कर रही है जिससे राष्ट्र की अन्त: बाह्य-सुरक्षा निरन्तर खतरे में पड़ती जा रही है। अत: यह सम्मेलन इस प्रस्ताव के माध्यम से भारत के प्रबुद्ध नागरिकों व संगठनों से यह अपील करती है कि वे इसके विरुद्ध जन-आन्दोलन चलायें तथा सरकार से यह मांग करते हैं कि तुरन्त इस पर प्रतिबन्ध लगाकर राष्ट्र की सुरक्षा व समृद्धि की ओर ध्यान दिया जाये।

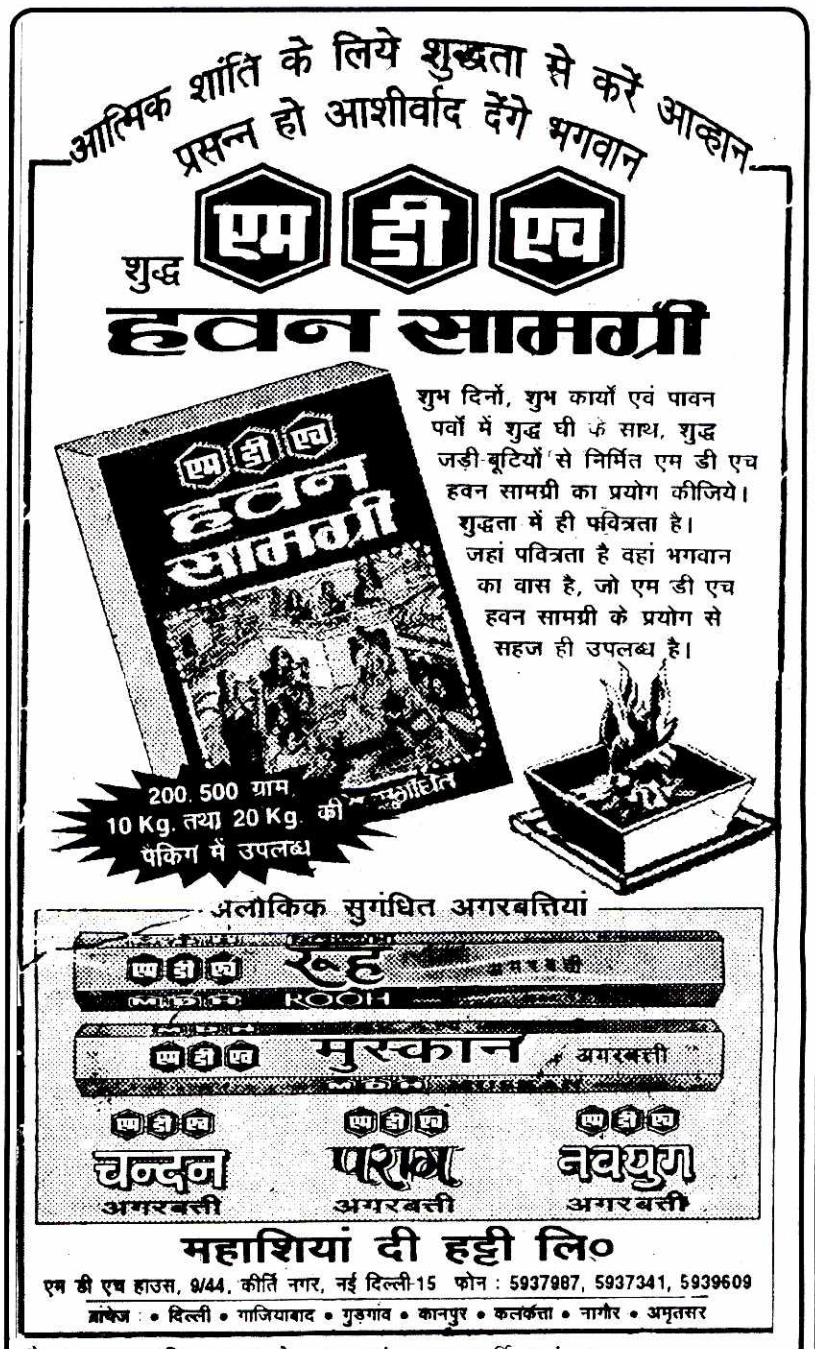

मै० **कुलवन्त पिक्कल स्टोर,** शाप नं० 115, मार्किट नं० 1, एन.आई.टी., फरीदाबाद-121001 (हरि०)
मै० **मेवाराम हंसराज,** किराना मर्चेन्ट, रेलवे रोड, रिवाड़ी-123401 (हरि०)
मै० **मोहनसिंह अवतारसिंह,** पुरानी मण्डी, करनाल-132001 (हरि०)
मै० **ओम्प्रकाश सुरिन्द्र कुमार,** गुड़ मण्डी, पानीपत-132103 (हरि०)
मै० **परमानन्द साईं दित्तामल,** रेलवे रोड, रोहतक-124001 (हरि०)
मै० **राजाराम रिखीराम,** पुरानी अनाज मण्डी, कैथल-132027 (हरि०)

आर्य-संसार

वेदप्रचार मण्डल हिसार के बढ़ते कदम

हिसार। वेदप्रचार मण्डल जिला हिसार के अध्यक्ष श्री रामकुमार आर्य एवं सभा पुस्तकाध्यक्ष वानप्रस्थ अत्तर सिंह स्नेही द्वारा 2 फरवरी 2013 को ग्राम बहबपुर में यज्ञ व वेदप्रचार किया गया। डॉ० इन्द्रसिंह आर्य, श्री सतपाल आर्य का विशेष सहयोग रहा। 3 फरवरी को अहिरका में धर्मपाल एस.डी.ओ. का विशेष योगदान रहा। 4 फरवरी को ग्राम बांडा पट्टी में छबिलदास सरपंच, बिशनसिंह पूर्व सरपंच का विशेष सहयोग रहा। 5 फरवरी को न्यौली कलां में श्री गौरव, भूपेन्द्र यादव का विशेष सहयोग रहा। 6 फरवरी को ग्राम लाडवी में श्री अमीचन्द, लालचन्द का विशेष सहयोग रहा। 7 फरवरी को ग्राम मिरकां में प्रिं० रोहताश, सतबीर सरपंच, कश्मीरीलाल का विशेष योगदान रहा। 8 फरवरी को ग्राम रावत खेड़ा में सुरजाराम, इन्द्रसिंह बिश्नोई तथा ग्राम पायला में श्री रामदेव शास्त्री, अजमेर पूर्व सरपंच का विशेष सहयोग रहा। 9 फरवरी को ग्राम स्हाडवा में श्री जयवीर सरपंच, मा० रामकुमार आर्य पूर्व सरपंच का विशेष सहयोग रहा। प्रत्येक गांव में यज्ञ किया गया। यज्ञ का लाभ, वैदिक सिद्धान्तों की जानकारी, महर्षि दयानन्द के जीवन व कार्य, आर्यसमाज का देश की आजादी में योगदान, चरित्र-निर्माण, राष्ट्ररक्षा, शराबबन्दी पर विचार रखे। वेदप्रचार मण्डल को स्वामी सर्वदानन्द जी कुलपति गुरुकुल धीरणवास व वैदिक विद्वान् आचार्य रामस्वरूप शास्त्री मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल आर्यनगर, डॉ० प्रमोद योगार्थी, आचार्य दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार का पूर्ण सहयोग व आशीर्वाद मिला।

10 फरवरी को आर्यसमाज नागोरी गेट हिसार में स्वामी सर्वदानन्द जी की अध्यक्षता में वेदप्रचार मण्डल की बैठक हुई जिसमें सभामन्त्री श्री सत्यवीर शास्त्री, मा० जिलेसिंह आर्य पधारे। 17 फरवरी को रोहतक में होने वाले सम्मेलन में बढ़-चढ़कर भाग लेने का अनुरोध किया। सभा का संचालन अत्तरसिंह स्नेही ने किया। बैठक में आचार्य पं० रामस्वरूप शास्त्री, ब्र० दीपकुमार आर्य, सूबेदार हरिसिंह, रामकुमार आर्य प्रधान, महेन्द्रसिंह मलिक, प्रिं० जिलेसिंह, मा० हरिराम आर्य आदि उपस्थित थे। सभी ने रोहतक सम्मेलन में जाने का आश्वासन दिया। **-सत्यप्रकाश मित्तल, हिसार**

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा में बिक्री हेतु निम्न साहित्य उपलब्ध हैं। कृपया इसका लाभ उठावें।

क्र०	पुस्तक का नाम		मूल्य
1.	प्रो० शेरसिंह : एक प्रेरक व्यक्तित्व	—	20-00
2.	धर्म-प्रवेशिका	—	10-00
3.	धर्म-भूषण	—	12-00
4.	वैदिक सिद्धान्त सार	—	20-00
5.	सत्यार्थप्रकाश	—	30-00
6.	वैदिक उपासना पद्धति	—	8-00
7.	पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती जीवन चरित	—	10-00
8.	ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका	—	50-00
9.	संस्कारविधि	—	30-00
10.	हैदराबाद सत्याग्रह में हरयाणा का योगदान	—	30-00
11.	पं० गुरुदत्त विद्यार्थी जीवन चरित	—	25-00
12.	महर्षि दयानन्द तथा वेदों पर आक्षेपों का उत्तर	—	15-00
13.	आर्यसमाज का कायाकल्प कैसे हो?	—	10-00
14.	पंजाब का हिन्दी रक्षा आन्दोलन	—	100-00
15.	स्मारिका-2002	—	10-00
16.	प्राणायाम का महत्त्व	—	15-00
17.	महाराणा प्रताप तथा उनके वंशज	—	10-50
18.	स्मारिका 1987	—	10-00
19.	स्मारिका 1976	—	10-00
20.	अमर हुतात्मा भगत फूलसिंह जीवनी	—	15-00
21.	अमर शहीद पं० रामप्रसाद 'बिस्मिल' जीवनी	—	30-00
22.	स्वामी श्रद्धानन्द जीवनी (कल्याण मार्ग का पथिक)	—	80-00

रसायन

❑ स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती, मो० : 9416133594

जिन आहार-विहारों से शरीर में प्रशस्त उत्तम और विशुद्ध रस आदि धातु उत्पन्न हों, वह रसायन माना जाता है।

यूं तो ऋषियों ने अनेक प्रकार के रसायनों का वर्णन किया है, उनमें दो प्रकार के रसायनों का भेद है। कुछ रसायन कोटि प्रवेश विधि से सेवन किया जाता है और कुछ केवल यम-नियम का पालन करते हुये विशेष औषधियों का सेवन किया जाता है, वह भी रसायन का ही काम करती हैं। आज के युग में ऋषियों जैसा वातावरण नहीं रहा। ग्राम और नगरों का जीवन दूषित हो चुका है। खाने-पीने की विशुद्ध वस्तुएँ नहीं मिल रही हैं और तो क्या प्राणवायु भी अति दूषित हो चुकी है ऐसी अवस्था में रसायनों का प्रयोग असम्भव-सा हो गया है। यूं तो चरक संहिता में आठ प्रकार की रसायनों का वर्णन है और एक विशेष सोम रसायन भी है जो मनुष्य का आद्योपान्त शरीर का नवनिर्माण कर देती है।

प्रथम चरण में हम उन आठ रसायनों का वर्णन करते हैं, जो आज के वातावरण में पथ्य के साथ सेवन करने पर सफलता मिलती है। उन आठ रसायनों के नाम इस प्रकार हैं—(1) आमलिक रसायन, (2) हरीतकी रसायन, (3) नागबला रसायन, (4) विडंगा रसायन, (5) भलातक रसायन, (6) त्रिफला रसायन, (7) पिप्पली वर्धमान रसायन, (8) शिलाजतु रसायन।

इनमें हमारे अनुभव से आज के वातावरण के अनुसार त्रिफला रसायन का विधिपूर्वक सेवन करने से सफलता मिलती है। सन् 1942 के स्वतन्त्रता आन्दोलन में लगभग सभी नेताओं को अंग्रेजों की सरकार ने जेल में बंद कर दिया था। लगभग सभी नेता जेल में थे। डाक्टर प्रतिदिन उनके स्वास्थ्य की जांच करने आया करते थे। सभी नेताओं को Blood Pressure (रक्तचाप) रहता था। परन्तु मदनमोलन मालवीय जी को रक्तचाप नहीं रहता था, हालांकि वे सभी नेताओं से ज्यादा वयोवृद्ध थे। डाक्टर भी आश्चर्यचकित थे कि मालवीय जी का रक्तचाप बढ़ा हुआ नहीं रहता है। आखिर एक दिन डाक्टरोंने उनसे पूछ ही लिया। मालवीय जी ने उत्तर दिया कि मैं सबसे सस्ती, जो केवल एक पैसा प्रतिदिन में आती है, ऐसी उत्तम, गुणकारी रसायन 'त्रिफला' का प्रयोग नियमित रूप से करता हूँ। वास्तव में त्रिफला वह गुणकारी औषधि है, जिसको निरन्तर पथ्य के साथ विधि-विधान से यदि सेवनकिया जाये तो यह मनुष्य को नवजीवन देती है।

त्रिफला के सेवन की विधि—

मधुकेन तुगाक्षीर्या पिप्पल्या क्षौद्रसर्पिणा।
त्रिफला सितया चापि युक्ता सिद्धं रसायनम्॥

चि० स्था० 45, चरक संहिता

मुलेठी, वंशलोचन, पीपल, मधु, घृत और मिश्री के साथ त्रिफला का प्रयोग एक वर्ष तक करें तो यह रसायन हो जाता है।

उपरोक्त किसी एक औषधि को त्रिफला के समान भाग मिलाकर, घृत और मधु विषम मात्रा में मिलाकर सेवन करना चाहिये और ऊपर से गर्म जल का सेवन करना चाहिये। इस रसायन का प्रात: खाली पेट प्रयोग करें और शाम को सोते समय सेवन करने से विशेष लाभ होता है। त्रिफला त्रिदोष नाशक है। बुद्धिवर्धक है। नेत्रज्योति बढ़ाता है, दांतों और मसूढ़ों को दृढ़ रखता है। बालों का झड़ना अथवा युवावस्था में बालों का पकना रोकता है। शरीर में झुर्रियाँ नहीं पड़ती। त्रिफला का निरन्तर सेवन करने वाले को बवासीर (अर्श), भगन्दर, आंतों का फूलना, अपचन होना, अम्लपित्त का होना, कोष्टबद्ध (कब्ज) होना अथवा अतिसार होना, मेदों वृद्धि (मोटापा) आना आदि रोग नहीं होते।

मैं 65 वर्षों से इस रसायन का सेवन करवाता आया हूँ। माता के दूध की तरह निर्दोष होता है।

त्रिफले को मीठे बच के चूर्ण, वायविडंग, पिप्पली, सेंधा नमक के साथ भी सेवन किया जाता है। यदि लगातार एक वर्ष तक सेवन करें तो मेधा, स्मरण शक्ति व बल की प्राप्ति होती है। यह रसायन आयु को बढ़ाने वाला, धन्य, अकाल में आने वाली वृद्धावस्था और रोगों को दूर करने वाला है। त्रिफला रसायन की दूसरी विधि एक चम्मच त्रिफला को पीसकर कल्क बनाकर नूतन लोहे के पात्र में लेप करके दिन-रात छोड़ दें, फिर उसे उतारकर 25 ग्राम मधु और 50 ग्राम जल में घोलकर शर्बत बनाकर प्रात:काल एक बार सेवन करें। एक वर्ष तक इसका प्रयोग करने से मनुष्य रोगरहित और वृद्धावस्था रहित होकर सौ वर्षों तक जीवित रहता है। परन्तु हम पहले भी कह चुके हैं कि त्रिफला सेवन की अवधि में मनुष्य को अष्टांग योग का अधिक से अधिक पालन अवश्य करना चाहिये।

सम्पर्क-योगस्थली आश्रम, बुचौली रोड, महेन्द्रगढ़

प्रयाग स्नान का सम्बन्ध

❑ आचार्य वेदमित्र, पातञ्जल योगाश्रम, भऊ आर्यपुर, रोहतक 9355675408

आजकल स्नान करने की होड़ सर्वत्र देखी जा सकती है। गंगा आदि के विभिन्न भागों में बाल-वृद्ध, स्त्री-पुरुष ही नहीं, साधुओं में और भी अधिक स्पर्धा मची हुई है। प्रथम स्नान के लिए कई बार अखाड़ों के साधुओं में झगड़े हो चुके हैं। वेद में स्नान का महत्त्व अनेक मन्त्रों में आया है—**तानि कल्पद् ब्रह्मचारी सलिलस्य पृष्ठे तपोऽतिष्ठत् तप्यमानः समुद्रे। स स्नातो बभ्रुः पिंगलः पृथिव्यां बहु रोचते॥** ज्ञान और तप की दीक्षा से पवित्र ब्रह्मचारी प्रथम ब्रह्मचर्य आश्रम रूप समुद्र से पार होकर उत्तर समुद्र स्वरूप गृहस्थ आश्रम को प्राप्त हो जाता है। यानि पिछले जन्मों के कुसंस्कारों को आचार्य के आचरण व शिक्षा से वह पवित्र हो जाता है। उसके मन आदि के पवित्र होने से गृहस्थ में भी वह अत्यधिक भोग आदि में लिप्त नहीं होता। जिस प्रकार अत्यधिक पशु-पक्षी के जोड़े संतान पैदा करने पर ही भोग में ब्रह्मचर्य तोड़ते हैं व पूर्ण आयु ब्रह्मचर्य के सेवन से न बूढ़े तथा न वीर्यहीन दीखते हैं। इसी प्रकार 25-30 वर्ष के ब्रह्मचर्य से पूर्ण स्त्री-पुरुष की संतान तन-मन से बलवान ही पैदा होगी। फिर आचार्य उनके पुत्र को देवत्व प्रदान करा देते हैं। वेद समाप्य स्नायाद्। यानि बाह्यज्ञान के साथ-साथ आत्मज्ञान से वे पवित्र हो जाते हैं। **गर्भो भूत्वा मृतस्य यौनाविद्रोह भूत्वा सुरां स्ततहं**। माँ जिस प्रकार गर्भ में बालक का ध्यान रखकर सुआहार विहार से पोषण करती है उसी प्रकार वेदज्ञान रूपी कुक्षि में ब्रह्मचारी को महाविद्वान्, आचारवान्, योगी, राष्ट्र-सेवक वह आचार्य बना देता है। माँ तो शरीर से जन्म देती है लेकिन आचार्य तो उसे परम विद्वान् तथा दिव्य गुणों वाला बना देता है। इसलिए यहाँ उसका असली स्वरूप प्रकट होता है। द्विज यानि जिसका दूसरा जन्म गुरु के गर्भ से हो वह द्विज। ऋषियों ने अपने पुत्रों को ऋषि सदृश इसी विद्या से बनाया था। इसीलिये ऋषि दयानन्द ने ब्रह्मचारी को आठ घड़ों के जल से स्नान कराने का महत्त्व वैशेषिक दर्शन के अनुसार 5 पंचभूत, दिशा, काल तथ मन, ये 8 प्रकृति, नौवीं आत्मा। इन प्रकृति को आत्मज्ञानी स्नातक उपवर्ग प्राप्ति हेतु प्रयोग में लेवें। वेद में बाह्यस्नान का महत्त्व इतना नहीं है जितना आजकल दिखाया जा रहा है। मनु महाराज ने कहा है कि शरीर की शुद्धि ही जल से होती है—**अद्भिर्गात्राणि शुध्यन्ति मनः सत्येन शुध्यति। विद्या तपोभ्यां भूतात्मा बुद्धिर्ज्ञानेन शुध्यति।** बाहर से स्नान किये सुन्दर पहनावे वाले कुकर्मी, व्यभिचारी जिस देश में हों वह देश क्या समृद्ध? सो विद्या और तप से आत्मा तथा शुद्ध ज्ञान से बुद्धि द्वारा उत्कृष्ट से उत्कृष्ट कार्य किये जा सकते हैं। इसीलिए ऋषियों ने बुद्धि के बल पर सुपर कम्प्यूटर की आवश्यकता नहीं समझी। कम्प्यूटर की फिंगर प्रिंट आदि से जो वैज्ञानिक यह सोचते हैं कि दूसरा आदमी अपनी फिंगर प्रिंट से दूसरे की चोरी नहीं कर सकेगा, यह भुलावा है। क्योंकि बुद्धि के ज्ञान की खोज चोर भी एक कदम आगे करेंगे। काश, वेद की शिक्षा से राजा प्रजा मन, बुद्धि से सत्य के आचरण वाले बनें, जिस पवित्र मन वाले वेदज्ञ राम ने चौदह वर्ष का प्रवास सहर्ष स्वीकार किया और अपनी जननी माँ की उपेक्षा करने वाले भरत ने लोभ को राम की खड़ाऊओं से पीटा। सीता को हरने वाले शत्रु रावण की पत्नी ने भी कहना पड़ा—**धन्या राम तव माता धन्या राम तव पिता। धन्यो राम तव वंशः परदारान्न पश्यसि।** ब्रह्मचारी आचार्य के वेदज्ञ शिष्य राम केवल बाह्य स्नान से बन जाते तो आज के महामेधावी पर स्त्री के प्रिय भ्राता बन जाते न कि व्यभिचारी। सुधार फांसी की सजा से होते तो वेद भगवान ब्रह्मचर्य शिक्षा के स्थान पर कत्लेआम का फरमान देते। वेद में ब्रह्मचारी को जब गुरु दीक्षा देता है तब तीन समिधाएं दिलवाता है—**इयं समित् पृथिवी द्यौद्वितीयोतान्तरिक्षं समिधा पृणाति।** ये तीन समिधाएं काष्ठ की नहीं हैं। काष्ठ तो पार्थिव ही होता है फिर द्यौ और अन्तरिक्ष वाली समिधाएं किसका संकेत करती हैं। ब्रह्मचारी का बाह्य शरीर, प्रथम समिधा, द्यौ रूप महत्तत्त्व (बुद्धि) दूसरी तथा इन दोनों के मध्य अन्तः में चित्त तीसरी। प्रथम शरीर महत्तत्त्व बुद्धि दूसरी समिधाएं तो जीव को प्रथम ही जन्म लेते ही मिल जाती हैं। तीसरी चित्त भी मिलती है। तीनों को यानि शरीर को आहार-विहार से सुदृढ़ बना सकते हैं। बुद्धि की निर्मलता तभी मिल सकती है जब चित्त निर्मल हो। जन्म-जन्म के शुभ व अशुभ संस्कार चित्त में पड़े रहते हैं। उस चित्त के क्षिप्त, विक्षिप्त आदि संस्कारों के निवारण करने, आचरण या व्रत को सतत अभ्यास से निर्मल किया जा सकता है। निर्मल चित्त वाला प्रभु की दी बुद्धि से उत्तम कार्य करेगा। यानि जिस जीव ने पूर्वजन्म में शरीर से जैसे कर्म किये उसी के अनुरूप इस जन्म में शरीर मिलेंगे। इसी प्रकार बुद्धि भी पूर्व जन्मानुसार उत्कृष्ट या मन्द मिल जाती है। लेकिन जो मध्य की समिधा चित्त की है, वह विशेष है। उसमें आचार्य के तेज द्वारा उसमें और उत्कृष्टता लाई जा सकती है।

प्रायः बुद्धिमान् बालक जन्म से तीक्ष्ण बुद्धि वाला होता है, अल्पबुद्धि वाले को महाविद्वान् आचार्य अनन्त पुरुषार्थ से भी महाबुद्धिमान् नहीं बना सकता। लेकिन अति तीक्ष्ण बुद्धि वाले चोर आदि आत्मज्ञानी गुरु द्वारा चोरी त्याग करते देखे गये हैं। पटवारी फूलसिंह बुद्धिमान् होते हुये भी रिश्वतखोरी करते थे। बदलाव उत्कृष्ट वृद्धजन से कैसे आया। चित्त में जन्म-जन्म के शुद्ध संस्कारों पर संकल्प से जागरण हुआ जिस प्रकार 20 वर्ष पूर्व की याद कविता किसी के मुख से सुनने से स्मृति के संस्कारों का प्रादुर्भाव हो जाता है। वेद भगवान् भी शरीर तथा द्यौ रूपी ज्ञान (अहम्) की समिधा को ब्रह्मचारी को प्रथम भिक्षा में लेने की कहते हैं—**इमां भूमिं पृथिवीं ब्रह्मचारी भिक्षाम् आजभार प्रथमो दिवं च।** अथर्व० 11.9 सो 6 वर्ष का उत्साही बालक अपने आचार्य के सामने दिये हुए सेवा, यज्ञ आदि कार्यों में प्रथम दिन से श्रद्धा कर लेता है। कठिन से कठिन वेदस्वाध्यायी आदि को कण्ठस्थ कर लेता है। युवा तथा क्षीण वृद्ध में ऐसा उत्साह नहीं होता। वह तो यह कहेगा आचार्य जी आप मुझे एक बार अष्टाध्यायी पढ़ा दें? लेकिन आचार्य ही जानता है एक सूत्र पूर्व से अन्त तक ऐसे गुथा हुआ है जिस प्रकार मांस-हड्डी से चेतना। मिट्टी के बने हाड़-मांस में स्पर्श मात्र से एक सार भाव चेतना का कौन जड़ तथा कहाँ चेतन। आचार्य तथा अपने ज्येष्ठ ब्रह्मचारियों के लिए गोघृत-दूध को 4 गुणा करने की भावना एक गुरुकुल के ब्रह्मचारी सत्यकाम में पैदा की जा सकती है। किसी ऑक्सफोर्ड के बेचलर या ग्रेजुएट में नहीं। डायना, प्रिंस चार्ल्स की तुलना सीता राम से कैसे? इसी कारण पाश्चात्य जगत् राम के चरित्र को एक झूठी कहानी मानता है। **बभूव श्रीमतिराजन् शांडिल्यस्य महात्मनः सुता धृतवती साध्वी नियता ब्रह्मचारिणी।** लेकिन वे क्या जाने यहाँ कितनी शांडिल्य की पुत्री के समान आजीवन ब्रह्मचारिणी भी हुई हैं। सो आचार्य बालक के बुद्धि के कुसंस्कारों को तप द्वारा तथा अपने आदर्श जीवन द्वारा तथा भक्ति करने से बुद्धि को ऋत् से भर देता है।

पतञ्जलि ऋषि जन्म-जन्म के कुसंस्कारों रूपी मल के संस्कारों को हटाने के लिए चित्तवृत्तिनिरोधः का मन्त्र देते हैं जो वेद भगवान् में यों कहा है—**महो अर्णः सरस्वती प्रचेतयति केतुना। धियो विश्वा विराजति।** ऋ० 1.3 ज्ञान की देवी सरस्वती विद्या और तप से प्रकट हो जाती है जब चित्त में काम, क्रोध, द्वेष भाव समाप्त हो जाते हैं। गंगा, यमुना, सरस्वती के संगम पर स्नान का महत्त्व भी वेद बताता है—**इमं मे गंगे यमुने सरस्वती०** ऋ० 10.71.5 ऋषि दयानन्द लिखते हैं—गच्छति इति गंगा। यच्छती यमुना काम, आसक्ति आदि बाह्य पदार्थों की इच्छा न रहे तथा अन्दर हृदय से क्रोध, द्वेष, वैर-भाव समाप्त होवे। इन दोनों के संगम से यानि जो प्रेम, करुणा, स्नेह, सेवाभाव नहीं हैं, उन्हें अन्दर लाना तथा जो हृदय में क्रोध, द्वेष, कामादि जन्म-जन्म के भाव हैं उन्हें योगाभ्यास व व्यवहार से त्यागना ही स्नान है। सो केवल बाह्य स्नान नहीं, मन आदि अन्तःकरण के स्नान करने से मोक्ष मिल सकताहै। यो विद्यां समाप्य समावर्त्तते स व्रत स्नातकः। आचार्य की विद्यास्थली ही तीर्थ है।

शरीर में भी इडा, पिंगला, सुषुम्ना नाड़ियां मिलती हैं, जिनमें ध्यान करने से योगी को सूक्ष्म, कारण शरीर तथा आत्मा का बोध होता है। यह प्रयाग/यानि हृदय रूपी यज्ञवेदि में आत्म हवि जो योगी देते हैं। इस आध्यात्म विद्या की प्राप्ति से उच्च लोक मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **सत्यवीर शास्त्री** ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।